

पाठ 24— अध्याय 19 और 20

हमने पिछले सप्ताह अध्याय 18 समाप्त किया, जिसमें व्यवस्थाविवरण का वह भाग पूरा हुआ जिसमें 4 मुख्य प्रकार के मानवीय सरकारी अधिकारियों का वर्णन किया गया था जिन्हें परमेश्वर ने इस्राएल पर शासन करने के लिए नियुक्त किया था: राजा, भविष्यद्वक्ता, न्यायी और याजक। आज जब हम अध्याय 19 की शुरुआत करते हैं, तो हम 3—अध्याय वाले भाग में प्रवेश करते हैं, जो इन विभिन्न सरकारी अधिकारियों के नियंत्रण में आने वाले मामलों से निपटेगा।

अपनी बाइबल में व्यवस्थाविवरण अध्याय 19 खोलिए।

व्यवस्थाविवरण अध्याय 19 पूरा पढ़ें

अध्याय की शुरुआत इन शब्दों से होती है, **“जब तुम्हारा परमेश्वर यहोवा उन जातियों को काट डालेगा जिनकी भूमि वह तुम्हें दे रहा है।”**..... यह मुझे तुम्हें कुछ याद दिलाने का अवसर देता है जिस पर हमने कुछ समय से चर्चा नहीं की है और यह व्यवस्थाविवरण को समझने के लिए महत्वपूर्ण है। यह पहला पद जो बात मन में ला रहा है वह यह है कि भले ही यह इस्राएल की 600,000 लोगों की सेना है जो कनान की भूमि को जीतने के लिए युद्ध में उतरने वाली है, यह वास्तव में यहोवा का युद्ध है। इसलिए जबकि एक सेना का सेनापति अपने लोगों से वादा कर सकता है कि वह सेना को युद्ध में ले जाएगा और यह सुनिश्चित करेगा कि उनका दुश्मन पराजित हो, यहाँ यहोवा ने इब्रानी सेना को युद्ध में ले जाने वाले की भूमिका निभाई है और यह कहकर इतना ही कहा है, **“जब तुम्हारा परमेश्वर यहोवा (सेना के नेता के रूप में) जातियों को काट डालेगा (पराजित करेगा).** यह परमेश्वर है जो युद्ध कर रहा है, इस्राएल के लोग नहीं। और चूँकि एक पवित्र परमेश्वर इस युद्ध की शुरुआत कर रहा है, इसलिए परिभाषा के अनुसार यह एक पवित्र युद्ध है, और, चूँकि यह एक पवित्र युद्ध है, इसलिए परमेश्वर ने पवित्र युद्ध के कुछ नियम निर्धारित किए हैं जो सामान्य और ठेठ मानवीय युद्ध से काफी भिन्न हैं, जिसका सामना हमने द्वितीय विश्व युद्ध, कोरिया, वियतनाम और अब इराक में किया है।

लेकिन पवित्र युद्ध क्या है? हमारी पीढ़ी में हम पवित्र युद्ध को या तो 900 साल पहले की घटना (धर्मयुद्ध) के रूप में देखते हैं या फिर ऐसी किसी घटना के रूप में जिससे हम वर्तमान में खुद को बचा रहे हैं: इस्लामिक जिहाद (यहूदियों और ईसाइयों के खिलाफ इस्लामी पवित्र युद्ध)। मैं आपको आश्चर्य करना चाहता हूँ कि इनमें से कोई भी बाइबल के अनुसार सच्चे पवित्र युद्ध का प्रतिनिधित्व नहीं करता है। असली पवित्र युद्ध पूरी तरह से बाइबल पर आधारित है और पवित्र युद्ध वह है जो इस्राएल, परमेश्वर की ओर से छेड़ने वाला है क्योंकि वे मूसा और उसके बाद उसके शिष्य यहोशू के नेतृत्व में वादा किए गए देश के करीब पहुँच रहे हैं।

लेकिन मैं आपको यह भी बता दूँ कि पवित्र युद्ध क्या नहीं है, बाइबल के दृष्टिकोण से, पवित्र युद्ध का मतलब धर्म का प्रसार करना नहीं है। इसका मतलब अलग विश्वास प्रणाली के लोगों को अपना धर्म अपनाने के लिए मजबूर करना नहीं है। इब्रानी धर्म के शुरुआती सिद्धांतों में से एक यह था कि इसके प्रति समर्पण पूरी तरह से स्वैच्छिक होना चाहिए और इस प्रकार धर्मांतरण की अवधारणा (जो ईसाई धर्म के लिए इतनी केंद्रीय बन गई है) का पालन इस्राएल द्वारा नहीं किया गया था।

हम इस बारे में उचित समय पर और बात करेंगे, लेकिन कृपया यह समझ लें कि पवित्र युद्ध एक ऐसा युद्ध है जिसे परमेश्वर अपनी इच्छा के अनुसार शुरू करता है और समाप्त करता है। हमारा क्रांतिकारी युद्ध कोई पवित्र युद्ध नहीं था, कुछ लोगों ने इसे शुरू किया जो एक राजा से मुक्त होना चाहते थे। द्वितीय विश्व युद्ध कोई पवित्र युद्ध नहीं था: इसे जापानियों और जर्मनों ने शुरू किया और अन्य देशों ने इसका जवाब दिया। धर्मयुद्ध वास्तव में पवित्र युद्धों की एक श्रृंखला नहीं थी, भले ही कई लोग इसे ऐसा कहते हों, कुछ कैथोलिक पोप और कुछ यूरोपीय कुलीन लोगों ने इसे शुरू किया और बस इसके साथ परमेश्वर का नाम जोड़ दिया (हालाँकि यह सुनिश्चित करने के लिए कि ये धर्म के बारे में युद्ध थे)। बाइबल केवल दो सच्चे पवित्र युद्धों की चर्चा करती है और मैं मान रहा हूँ कि ये दो ही इतिहास में कभी होने वाले हैं : कनान की विजय के लिए पवित्र युद्ध और पृथ्वी ग्रह के लिए पवित्र युद्ध जिसे बाद में आर्मिगिडन की लड़ाई कहा जाने लगा। यह भी समझें कि (जहाँ तक हम जानते हैं) इस्राएल के पुरुषों और महिलाओं के पास किसी भी कनानी राष्ट्र के खिलाफ व्यक्तिगत रूप से कुछ भी नहीं था, और आम तौर पर कहें तो किसी भी कनानी राष्ट्र के पास इस्राएल के खिलाफ कुछ भी व्यक्तिगत रूप से नहीं था। इस बिंदु तक ये राष्ट्र ऐतिहासिक रूप से विरोधी नहीं थे। यह पूरी बात परमेश्वर पर थी। इस्राएल के परमेश्वर ने घोषणा की कि कनान के निवासी उसके शत्रु थे, और जिस भूमि पर उन्होंने कब्जा किया था वह उसकी भूमि थी जिसे उसने अपने चुने हुए लोगों, इस्राएल के कब्जे के लिए अलग रखा था, और अब समय आ गया है कि इसे इस्राएल को सौंप दिया जाए और अगर जरूरत पड़ी तो वह युद्ध के जरिए इस लक्ष्य को हासिल करेगा (और ऐसा हुआ भी)।

इस्राएल की सेना, परमेश्वर के क्रोध और विनाश का साधन मात्र थी, जो कनान जाति पर थी, जिसके बारे में परमेश्वर ने निष्कर्ष निकाला कि वह दुष्ट है और विनाश के योग्य है। मैं इसे दूसरे तरीके से कहूँगा: इस्राएल के मन में कनान के लोगों के प्रति कोई अंतर्निहित क्रोध या घृणा नहीं थी, और कनान के मन में इस्राएल के लोगों के प्रति कोई दबा हुआ क्रोध या घृणा नहीं थी; अब तक किसी ने भी एक दूसरे को नुकसान नहीं पहुँचाया या धमकी नहीं दी।

यह अनुभूति हमें यह समझने में बहुत मदद करती है कि इस्राएल, कनान में रहने वाले विभिन्न लोगों के साथ युद्ध करने के लिए अनिच्छुक था, तथा यहोशू, कनान के विभिन्न नगर-राज्यों के साथ शांति संधि करने के लिए इच्छुक था, बजाय इसके कि यदि वे इस्राएल के शासन को स्वीकार करने से इनकार करते,

तथा अपने झूठे देवताओं की पूजा जारी रखने पर रोक लगाने से इनकार करते, तो उन्हें बाहर निकाल दिया जाता या मार दिया जाता (जैसा कि परमेश्वर ने इस्राएल को करने का निर्देश दिया था)।

यहोवा कहता है कि एक बार जब उसका पवित्र युद्ध जीत के साथ समाप्त हो जाता है और उसके चुने हुए लोग इस्राएल उन पूर्व में कनानी शहरों और कस्बों में रहने लगते हैं, तो इस्राएल के नेताओं को उन कब्जे वाले शहरों में से 3 को शरण के निर्दिष्ट शहरों (जिन्हें अभयारण्य शहर भी कहा जाता है) के रूप में अलग करना है। यहाँ परमेश्वर द्वारा विभाजन, चुनाव और अलग करने (उनके मूलभूत ईश्वरीय सिद्धांतों में से एक) का एक और मामला है। आइए स्पष्ट करें: कुछ समय पहले मूसा को ट्रांसयर्डन क्षेत्र में 3 शरण नगर स्थापित करने का निर्देश दिया गया था, जो अब इस्राएल के पास था और जहाँ से इस्राएल, कनान पर अपना हमला शुरू करेगा (ट्रांसयर्डन, यर्डन नदी के पूर्वी किनारे पर स्थित भूमि है)। यहाँ पद 2 में वर्णित ये 3 शहरों को यर्डन नदी के पश्चिमी तट पर स्थित पहले 3 अभयारण्य शहरों के रूप में स्थापित किए जाने हैं और उन्हें सावधानीपूर्वक चुना जाना है ताकि (जैसा कि पद 3 में कहा गया है) वे प्रत्येक पवित्र भूमि के लगभग 1/3 भाग की सेवा करते हैं। विचार यह है कि अभयारण्य शहर, केंद्र में स्थित होंगे ताकि किसी इब्रानी को सुरक्षा के लिए इन शहरों में से किसी एक में जाने की आवश्यकता हो, उसे बहुत दूर यात्रा न करनी पड़े और रक्त प्रतिशोधक द्वारा उसे पकड़ने से पहले वह जल्दी से वहाँ पहुँच सके।

हमने पहले पढ़ा है कि इस्राएली संघ के 12 आदिवासी क्षेत्रों में 48 लेवी शहर स्थापित किए जाने हैं, पश्चिम की ओर ये 3 शहर और यर्डन के पूर्व की ओर पहले से स्थापित 3 शहर, उन नियोजित 48 लेवी शहरों में से 6 हैं। लेकिन इन 6 शहरों का एक अनूठा उद्देश्य है, वे एक ऐसी जगह हैं जहाँ किसी व्यक्ति ने किसी की हत्या की है और वह भाग सकता है और उस मृत व्यक्ति के रिश्तेदारों द्वारा प्रतिशोध में मारे जाने से बच सकता है। ये 6 शहर सुरक्षित क्षेत्र थे और हत्यारे को उन शहरों के मालिक और शासन करने वाले लेवियों द्वारा संरक्षित किया जाएगा। लेकिन एक चेतावनी थी, हत्यारे को हत्या करने के इरादे के बिना हत्या करनी थी। हम इस तरह के कृत्य को हत्या कहते हैं। पद 5 यहाँ तक जाता है कि एक निश्चित उदाहरण देता है कि किस तरह का हत्यारा, शरण के शहर की दीवारों के भीतर सही मायने में होना चाहिए; एक आदमी एक पेड़ को काटने के लिए कुल्हाड़ी घुमाता है, कुल्हाड़ी का सिर गलती से ढीला होकर उड़ जाता है, और एक निर्दोष व्यक्ति मारा जाता है और मारा जाता है।

कुल्हाड़ी चलाने वाले व्यक्ति को उस निर्दोष व्यक्ति के रिश्तेदारों से समझ मिलने की संभावना नहीं है जो घातक रूप से घायल हो गया है। यह उस समय की पारंपरिक मध्य पूर्वी संस्कृति थी (और मध्य पूर्व के कई क्षेत्रों में यह अभी भी ऐसा ही है) कि किसी भी परिस्थिति में किसी अन्य की मौत के लिए जिम्मेदार व्यक्ति को मृतक के जीवित बचे लोगों द्वारा खोज कर मार दिया जाना चाहिए। ऐसा न करना मृतक के जीवन पर एक भयानक अपमान था। जिस रिश्तेदार का कर्तव्य अपराधी को ढूँढना और मारना है उसे **खून का बदला लेने वाला** कहा जाता है, इब्रानी में उसे **गोएल** या बेहतर **गोएल** हदम (खून का उद्धारक) कहा जाता है।

इस्राएल के लिए प्रभु द्वारा प्रदान किए गए 6 शरण नगर, आकस्मिक हत्या के लिए भी खून के बदले की इस स्पष्ट रूप से अनुचित और अनुचित प्रथा का उत्तर थे। विचार यह था कि हत्यारा किसी को मारने के तुरंत बाद शरण नगरों में से किसी एक की ओर भागेगा, अगर वह ऐसा करता है, तो वह सुरक्षित है। इसलिए हमने इस चिंता पर चर्चा की कि शरण के 6 नगर काफी समान रूप से फैले हुए और सुलभ होने चाहिए।

हालाँकि अगर खून का बदला लेने वाले ने हत्यारे को सुरक्षित शरण में पहुँचने से पहले ही पकड़ लिया था, तो उस खून का बदला लेने वाले के लिए उसे मारना पूरी तरह से व्यवस्था था। हाँ, यह एक दिलचस्प तथ्य है कि जबकि हम अनजाने हत्यारे को सुरक्षित शरण देने वाला व्यवस्था पाते हैं, हमें ऐसा कोई व्यवस्था नहीं मिलता जो खून का बदला लेने वाले को उस व्यक्ति को मारने से रोकता हो, अगर वह शरण के शहर में पहुँचने से पहले उस तक पहुँच सकता है।

पद 8 में उस समय के बारे में विचार किया गया है जब प्रभु इस्राएल की क्षेत्रीय संपत्ति का विस्तार करेंगे और जब वे ऐसा करेंगे तो 3 अतिरिक्त शरण नगर स्थापित किए जाएँगे जिससे कुल 9 हो जाएँगे। वैसे इस बात का कोई सबूत नहीं है कि अंतिम 3 शरण नगर कभी भी संचालन में लाए गए थे। यह इस अध्याय में चर्चा किए गए पहले मामले, आकस्मिक हत्यारे के मामले को समाप्त करता है।

दूसरा मामला पद 11 में शुरू होता है और यह पूर्व नियोजित हत्या (जानबूझकर और अन्यायपूर्ण हत्या) को परिभाषित करता है। इस हत्यारे को शरण के शहर में सुरक्षित आश्रय पाने का कोई अधिकार नहीं है; बल्कि जिस शहर से वह संबंधित है, उसके बुजुर्गों को शरण के शहर की यात्रा करनी चाहिए (यदि वह वहाँ से भाग गया है, परिस्थितियों के बारे में झूठ बोला है और इसलिए शरण चाहता है) और उसे गिरफ्तार करके परिवार के गोएल को सौंप देना चाहिए, खून का बदला लेने वाला, जो व्यवस्था तौर पर हत्यारे को मौत के घाट उतार देता है और इस तरह उस युग की परंपराओं और रीति-रिवाजों का सम्मान करता है। हालाँकि यह नहीं बताया गया है कि शहर के बुजुर्गों को गिरफ्तारी के लिए इसलिए भेजा जाता है क्योंकि वे ही अधिकारी हैं जो मामले की जाँच और सुनवाई के लिए अधिकृत हैं, और अगर उन्हें लगता है कि यह वास्तव में हत्या का मामला है तो वे हत्यारे को न्याय के लिए खून का बदला लेने वाले को सौंप देंगे या अगर उन्हें लगता है कि हत्या आकस्मिक थी तो वे हत्यारे को अभयारण्य शहर में वापस कर देंगे।

पूर्व शिक्षाओं से कुछ महत्वपूर्ण सिद्धांत हैं जो शरण नगरों और रक्त प्रतिशोधियों की इस प्रणाली के मूल में हैं। पहला सिद्धांत यह है कि जानबूझकर किए गए पाप लैव्यव्यवस्था बलिदान प्रणाली द्वारा कवर नहीं किए जाते हैं, और दूसरा यह है कि बलिदान प्रणाली द्वारा कवर नहीं किए गए किसी भी पाप के लिए भुगतान के रूप में अपराधी के रक्त (जीवन) की आवश्यकता होती है। मुझे इस बारे में हर समय प्रश्न मिलते हैं, इसलिए मैं इसे बहुत संक्षेप में बताता हूँ। यदि किसी पाप का प्रायश्चित्त, पशु बलि के माध्यम से किया जा सकता है (और तोरह परिभाषित करता है कि कौन सा पशु बलि दे सकता है और कौन नहीं), तो पीड़ित को दिए गए कुछ अतिरिक्त प्रकार के व्यक्तिगत प्रतिपूर्ति के अलावा अपराधी को परमेश्वर और समुदाय द्वारा क्षमा किया जा

सकता है। लेकिन जब कोई ऐसा अपराध किया जाता है जिसके लिए मूसा के व्यवस्था के अनुसार अपराधी को मृत्युदंड देना आवश्यक है, तो आपके पास एक ऐसा अपराध है जिसके लिए प्रतिस्थापन प्रायश्चित का कोई प्रावधान उपलब्ध नहीं है। यह अपराध ईश्वर द्वारा निर्धारित बलिदान प्रणाली की क्षमता और उद्देश्य से बाहर है जो आपको प्रायश्चित के माध्यम से बचा सकता है। हत्या एक ऐसा अपराध है जो मूर्तिपूजा के समान है। कोई भी व्यक्ति इनमें से कोई भी अपराध करके पशु बलि देकर प्रायश्चित नहीं कर सकता। इसके बदले में उसका मूल्य, आपका अपना खून (यानी आपकी अपनी जान) है।

खून के बारे में याद रखने के लिए एक अच्छा नियम है: केवल निर्दोष खून ही पापों का प्रायश्चित कर सकता है। मैंने कुछ लोगों को यह सिखाते हुए सुना है कि बाइबल के समय में जब किसी हत्यारे का खून बहाया जाता था तो यह प्रभु के लिए प्रायश्चित का एक रूप था, यह सच नहीं है। दोषी का खून कभी भी प्रायश्चित नहीं हो सकता। खून बहाने के दो मुख्य पहलू हैं: पहला यह कि दोषी का खून परमेश्वर को प्रतिपूर्ति के रूप में चाहिए, पाप के लिए परमेश्वर को चुकाई जाने वाली कीमत (पाप की मजदूरी मृत्यु है)। दूसरा पहलू यह है कि निर्दोष के खून की आवश्यकता उन पापों के प्रायश्चित के लिए होती है जिनके लिए परमेश्वर ने फैसला किया है कि वे प्रायश्चित कर सकते हैं (जिससे दोषी व्यक्ति को जीवित रहने की अनुमति मिलती है) इसलिए एक पशु बलि में मानव पापी का अपराध, प्रतीकात्मक रूप से बलि के जानवर पर स्थानांतरित हो जाता है, और उस पर डाल दिया जाता है जो अन्यथा निर्दोष है। जब उस निर्दोष पशु का रक्त बहाया जाता है तो यह दोषी पक्ष के रक्त (जीवन) के रूप में परमेश्वर को आवश्यक भुगतान के विकल्प के रूप में कार्य करता है, और यह निर्दोष का बहाया गया रक्त ही है जो दोषी पक्ष के लिए प्रायश्चित (जो क्षमा की ओर ले जाता है) का साधन है।

परमेश्वर की व्यवस्था में **गोएल** (खून का बदला लेने वाला) कुछ भी गलत नहीं कर रहा है, वह केवल परमेश्वर के न्याय को संतुष्ट करने के लिए परमेश्वर के प्रतिनिधि के रूप में कार्य कर रहा है, ताकि हत्यारे के जीवन को प्रतिपूर्ति के रूप में लिया जा सके, लेकिन साथ ही साथ कोई प्रायश्चित (परमेश्वर के सामने कोई क्षमा नहीं) संभव नहीं है क्योंकि पाप की जानबूझकर और निरंकुश प्रकृति है। हमारे लिए अच्छी खबर यह है कि मसीहा यीशुआ का खून (आम तौर पर) जानबूझकर किए गए पापों के वर्गीकरण के लिए भी प्रायश्चित कर सकता है, जिसके लिए बलिदान प्रणाली को प्रायश्चित करने के लिए डिज़ाइन नहीं किया गया था। यीशुआ, खून के बदला लेने वाले से एक सुरक्षित आश्रय है (वह एक शरण का शहर है) यहाँ तक कि पूर्व नियोजित हत्यारे के लिए भी। यही कारण है कि मसीह का बलिदान, पशु बलिदानों से बेहतर है। बेशक पापों का यह प्रायश्चित स्वचालित नहीं है। किसी को अपने मुँह से घोषणा करनी चाहिए और अपने मन में विश्वास करना चाहिए कि यीशुआ, परमेश्वर और उद्धारकर्ता है। वास्तव में कोई पिता से कह रहा है कि आप अपने पापों के प्रायश्चित के लिए यीशुआ के बलिदान पर आराम कर रहे हैं।

अपने पापों का प्रायश्चित्त करें, चाहे वे जानबूझकर किए गए हों या अनजाने में। इसके अलावा एक और महत्वपूर्ण आवश्यकता है: आपको अपने पापों को स्वीकार करना चाहिए और ईमानदारी से पश्चाताप करना चाहिए। एक के बिना दूसरा प्रभावी नहीं है।

दिलचस्प बात यह है कि पुराने नियम की बलिदान प्रणाली को पापी के लिए भी प्रभावी बनाने के लिए सच्चे पश्चाताप की यही आवश्यकता थी।

मैंने रक्त और बलिदान के इन सिद्धांतों की समीक्षा इस कारण से की : नए नियम ने रक्त का बदला लेने वाले के संबंध में पुराने नियम की शिक्षा को रद्द नहीं किया। इब्रानियों की नए नियम की पुस्तक के लेखक की बात सुनिए: इब्रानियों 10:26 “यदि हम सत्य का ज्ञान प्राप्त करने के बाद जानबूझ कर पाप करते रहें, तो पापों के लिए कोई बलिदान बाकी नहीं है, 27 बल्कि न्याय की एक भयानक बाट जोहना और भड़कीली आग बाकी है जो परमेश्वर के शत्रुओं को भस्म कर देगी।

लैव्यव्यवस्था के बलिदान की व्यवस्था में जानबूझकर (जानबूझकर) किए गए पापों के लिए प्रायश्चित्त का कोई साधन नहीं था। और उसी पैटर्न में भले ही यीशु हमें जानबूझकर किए गए पापों से भी बचा सकता है (जो बलिदान की व्यवस्था नहीं कर सकती थी), एक समय ऐसा आता है जब पिता यह निर्धारित करता है कि चूँकि हम सत्य जानते हैं (कि यीशु उद्धारकर्ता है और हमें बचाए जाने की आवश्यकता है), और हम जानबूझकर पाप करते रहते हैं, हमारा पश्चाताप सच्चा नहीं हो सकता और इसलिए मसीहा का खून भी हमारे लिए प्रायश्चित्त नहीं कर सकता। उस परिस्थिति में जो कुछ भी हमारा इंतजार कर रहा है वह है न्याय और हमारे अनंत विनाश की प्रचंड आग। परमेश्वर हमेशा से ही खून का बदला लेने वाला रहा है।

मुझे एक पल के लिए कुछ ऐसा दोहराने दीजिए जो मैंने कई मौकों पर कहा है, लेकिन खून और हत्या के विषय पर पाठ के बाद हमेशा मेरे सामने आता है: यीशु द्वारा हमें उपलब्ध कराई गई क्षमा, आध्यात्मिक प्रकृति की है। विचार यह नहीं है कि हमारे कार्यों के लिए सांसारिक परिणाम अब रद्द कर दिए गए हैं। यह शब्दों से परे अद्भुत है कि एक जघन्य अपराध का अपराधी अपने गलत को देख सकता है, मसीहा के पास आ सकता है, पश्चाताप कर सकता है और स्वीकार कर सकता है और बदल सकता है और परमेश्वर पर भरोसा कर सकता है, लेकिन बाइबल किसी भी तरह से यह नहीं सोचती है कि यह अपराधी न्याय से बच जाए। पश्चाताप करने वाले मसीही हत्यारे को अवश्य ही मरना चाहिए। अन्यथा, पूरा समुदाय उसके खून के अपराध में बना रहेगा क्योंकि प्रभु का न्याय नहीं किया गया।

प्रभु की न्याय प्रणाली में हमेशा से ही आध्यात्मिक और भौतिक घटक होते हैं और आज भी होते हैं। यीशु के बलिदान ने परमेश्वर के न्याय के आध्यात्मिक घटक की कीमत चुकाई। परमेश्वर की न्याय प्रणाली के भौतिक घटक को मानवीय सरकार के माध्यम से कार्यान्वित किया जाना चाहिए। जिस तरह मानवीय सरकार किसी अपराधी के लिए आध्यात्मिक प्रायश्चित्त प्रदान नहीं कर सकती, उसी तरह परमेश्वर की आध्यात्मिक क्षमा

भी उसी अपराधी को मिलने वाले शारीरिक दंड को रद्द करने का प्रावधान नहीं करती, चाहे वह कितना भी आध्यात्मिक रूप से पश्चातापी और क्षमा किया हुआ क्यों न हो।

पद 13 में दो दिलचस्प बातें कही गई हैं जो हत्या और गोएल के मामले को समाप्त करती हैं; पहला यह कि हत्यारे पर कोई दया नहीं दिखानी है और दूसरा यह कि हत्यारे को फाँसी देकर निर्दोष पीड़ित का खून इस्राएल से मिटा दिया जाएगा। "कोई दया नहीं" कहने का मतलब यह है कि यहोवा यह स्पष्ट करना चाहता है कि किसी हत्यारे को कभी भी प्रेम या इस भावना से नहीं बख्शा जाना चाहिए कि अपराध के लिए दंड बहुत कठोर है। प्रभु समझता है कि हत्यारा के पास संभवतः बहुत से लोग हैं जो उससे प्यार करते हैं और वह यह भी समझता है कि किसी परिवार या समुदाय द्वारा ऐसा प्यार उन्हें उस पर दया करने और उसकी सजा कम करने के लिए प्रेरित कर सकता है, लेकिन यह पूरी तरह से निषिद्ध है। क्यों? एक कभी न बदलने वाले ईश्वर-सिद्धांत के कारण जो हमने तोरह के कई अंशों में देखा है कि निर्दोष रक्त (हत्या के शिकार) के बहने से पूरे समुदाय पर खून का अपराध बनता है, और पूरे समुदाय पर लगा खून का अपराध तभी खत्म होता है जब अपराधी का खून प्रायश्चित्त के रूप में बहाया जाता है। इस प्रावधान को कभी भी रद्द नहीं किया गया है, हम आज भी इसके साथ जी रहे हैं। आप देखिए, यहाँ जो दांव पर लगा है, वह है ईश्वर की न्याय व्यवस्था का क्रियान्वयन।

इसके बाद व्यवस्थाविवरण 19 एक तीव्र मोड़ लेता है और दो बिल्कुल अलग विषयों को संबोधित करता है: सीमा चिह्न और अपराधों के गवाह। प्राचीन काल से ही पत्थरों के ढेर का उपयोग वास्तविक संपत्ति की सीमा रेखाओं को दर्शाने के लिए किया जाता था, और पद 14 इसे एक गंभीर नैतिक अपराध बनाता है कि कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी की संपत्ति के सीमा चिह्नों को हटाकर अपनी संपत्ति का विस्तार करे। इस्राएल के बीच जो बात इसे इतना गंभीर बनाती है, वह यह है कि हमारे पास पहले से ही एक व्यवस्था स्थापित है कि भूमि को हमेशा के लिए एक परिवार, कुल और गोत्र के पास ही रहना चाहिए। सब्ब के वर्ष, और जयंती, और स्वजन उद्धारक के सभी व्यवस्थाओं का लक्ष्य, भूमि को उसके मूल इब्रानी मालिक को वापस करना या बनाए रखना था। इसलिए किसी के लिए सीमा चिह्नों को हटाना (जिससे किसी और की भूमि का एक हिस्सा लेना) परमेश्वर द्वारा स्थापित व्यवस्था की अवहेलना करना था। यह किसी व्यक्ति के विरुद्ध अपराध से कहीं अधिक परमेश्वर के विरुद्ध अपराध था।

पद 15 एक असफल-सुरक्षित प्रणाली स्थापित करता है जिसका उद्देश्य या तो बहुत कम या बिना किसी सबूत के, या झूठी या गलत गवाही के आधार पर गलत सजा को रोकना है। और प्रावधान संख्या एक यह है कि अभियुक्त को दोषी ठहराने के लिए एक गवाह की गवाही पर्याप्त नहीं है, दो गवाहों की आवश्यकता है और यह आदर्श संख्या नहीं है, बल्कि दो न्यूनतम है। हालाँकि वास्तविकता यह है कि ऐसा हुआ कि एक ही गवाह आगे आया और आरोप लगाया और इससे जाँच और मुकदमा शुरू हो गया। गवाहों ने बाइबल की न्याय प्रणाली में कई कार्य किए; एक गवाह अक्सर वह होता था जो पहले आरोप लगाता था। या एक गवाह

वह व्यक्ति हो सकता था जिसे मामले के बारे में कुछ प्रासंगिक जानकारी थी। इसके अलावा एक मृत्युदंड के मामले में एक गवाह अक्सर मुख्य जल्लाद होता था (चाहे वे बनना चाहें या नहीं)।

ये अगले कई पद झूठे गवाह के मामले से निपटते हैं। यानी, कोई व्यक्ति जो जानबूझकर किसी के खिलाफ झूठा आरोप लगाता है या किसी भी कारण से आरोपी के खिलाफ जानबूझकर झूठी गवाही देता है। अगर अदालत (जिसमें आम तौर पर पादरी और नियुक्त आम लोग होते हैं) जाँच करती है और निर्धारित करती है कि गवाह ने जानबूझकर झूठी गवाही दी है, तो झूठे गवाह को वही सजा भुगतनी होगी जो आरोपी व्यक्ति को भुगतनी होगी अगर उसे उस झूठी गवाही पर दोषी ठहराया गया होता। मुझे यह पसंद है! आपको लगता है कि आज हमारे पास कितनी दुर्भावनापूर्ण झूठी पुलिस रिपोर्ट और झूठे गवाह होंगे अगर झूठ बोलने वाले और एक निर्दोष व्यक्ति को जेल जाने का कारण बनने वाले व्यक्ति को जेल में उतना ही समय बिताना पड़े जितना कि उसने जिस अपराध की झूठी रिपोर्ट की थी, उसके लिए आवश्यक था? यह बाइबल का व्यवस्था इस हद तक चला गया कि किसी गवाह के लिए मृत्युदंड की माँग की गई जिसने किसी पर झूठा और जानबूझकर गंभीर अपराध का आरोप लगाया। मैं स्पष्ट रूप से बता दूँ कि सामान्य तौर पर यह झूठी गवाही परिभाषा के अनुसार जानबूझकर झूठ बोलना था न कि गलत पहचान या साधारण त्रुटि और झूठे गवाह के लिए इस कठोर परिणाम के कारण के रूप में हमें केवल ईश्वर-पैटर्न का उल्लेख करना है जिसे हमने बार-बार पढ़ा है: झूठे गवाह के साथ वही करने से जो उसने अपने शिकार के साथ करने की योजना बनाई थी, दूसरे लोग भी ऐसा करने से डरेंगे और इस तरह समुदाय में ऐसी बुरी चीजें फिर कभी नहीं होंगी। वाह, आज के सामाजिक इंजीनियर और आपराधिक न्याय प्रणाली हमें जो सामान्य ज्ञान बताने की कोशिश करती है, वह कभी काम नहीं करेगा। हमें बताया जाता है कि ऐसे काम करने वाले लोगों के लिए कठोर सजाएँ समाज को और भी बदतर बनाती हैं। ईश्वर कहते हैं, "नहीं", मनुष्यों (जैसा कि हम हैं) को एक स्वस्थ भय की आवश्यकता है जो हमें झूठी गवाही देने के बारे में दो बार सोचने पर मजबूर करे और उनका सिस्टम समाज से इस तरह की बुराई को खत्म करने की दिशा में काम करता है।

अध्याय 19 उस सूत्रीकरण के साथ समाप्त होता है जिसे विद्वान **लेक्स टैलियोनिस** कहते हैं। यह आँख के बदले आँख, दाँत के बदले दाँत का क्लासिक सिद्धांत है जिसे सदियों से बहुत बुरी तरह से तोड़-मरोड़ कर पेश किया गया है और गलत तरीके से लागू किया गया है। ध्यान दें कि इस मामले में सिद्धांत को सीधे झूठी गवाही के अपराध पर लागू किया जा रहा है; यह सब इस बारे में है कि झूठे गवाह के साथ क्या किया जाए। इस सूत्र को शाब्दिक रूप से नहीं लिया जाना था और न ही यह व्यक्तिगत प्रतिशोध के उद्देश्य से था, यह एक मुहावरा था। ईश्वर के व्यवस्था में सजा के रूप में अंग-भंग करना सख्त वर्जित था। इसलिए यदि आपने किसी की आँख फोड़ दी (यहाँ तक कि जानबूझकर भी) तो मूसा के व्यवस्था में उस व्यक्ति को बदले में आपकी आँख फोड़ने की अनुमति नहीं थी। बल्कि यह एक ऐसा कथन है जो सजा की गंभीरता पर सीमाएँ लगाता है, साथ ही सजा के कम्यूटेशन पर भी सीमाएँ लगाता है। मूल रूप से धारणा यह है कि सजा, अपराध के अनुरूप होनी चाहिए: यह आनुपातिक होनी चाहिए। किसी व्यक्ति को अपनी जमीन इसलिए नहीं खोनी

चाहिए क्योंकि उसने बकरी चुराई है। किसी व्यक्ति को इसलिए नहीं पीटा जाना चाहिए क्योंकि वह मौद्रिक ऋण का भुगतान नहीं कर सका और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि किसी व्यक्ति को संपत्ति संबंधी अपराध के कारण या किसी को नुकसान पहुँचाने के कारण अपनी जान नहीं गंवानी चाहिए, बल्कि इसलिए कि उसने किसी की हत्या नहीं की है।

साथ ही, अगर कोई व्यक्ति जानबूझकर हत्या करता है तो उसे जुर्माना देकर फाँसी से नहीं बचाया जा सकता। न ही अगर कोई व्यक्ति जानबूझकर किसी को अपंग बनाता है तो वह घायल व्यक्ति को मामूली रकम देकर उसे बराबर कर सकता है।

मैं अब कुछ कहना चाहता हूँ जिस पर हम बाद में वापस आएँगे: **लेक्स टैलियोनिस** (आँख के बदले आँख) का सिद्धांत केवल दीवानी और आपराधिक मामलों पर लागू होता था। यह इस बात का सिद्धांत नहीं था कि मनुष्य को अपने व्यक्तिगत संबंधों में कैसे काम करना चाहिए। हम एक दूसरे के साथ कैसा व्यवहार करते हैं और व्यक्तिगत मुद्दों से कैसे निपटते हैं जिसमें अपराध शामिल नहीं था, यह इस अवधारणा से पूरी तरह बाहर था। विचार यह नहीं है (उदाहरण के लिए) कि अगर कोई आपका मौखिक रूप से अपमान करता है तो आप उसका अपमान करने के लिए स्वतंत्र और उचित हैं। मैं इसे फिर से कहता हूँ: लेक्स टैलियोनिस ईश्वर की न्याय प्रणाली के बारे में है, न कि पारस्परिक संबंधों के बारे में। इस्राएल में दोनों को मिलाने की बुरी आदत थी, ईसाई अक्सर इसे भ्रमित कर देते हैं, और यीशु के पास इसके बारे में कहने के लिए बहुत कुछ था।

आइये अध्याय 20 की ओर बढ़ते हैं।

व्यवस्थाविवरण अध्याय 20: 1-10 पढ़ें

अध्याय 20 इस बारे में है कि इस्राएल को युद्ध के लिए कैसे तैयार होना चाहिए: पवित्र युद्ध। मैं इस बात पर फिर से जोर देना चाहता हूँ: हालाँकि किसी भी तरह के सशस्त्र संघर्ष की तैयारी में इन निर्देशों का उपयोग करना गलत नहीं होगा, लेकिन ये निर्देश, पवित्र युद्ध लड़ने के बारे में हैं जिसे परमेश्वर ने नियुक्त किया है। मनुष्यों को युद्ध को "पवित्र" घोषित करने का कोई अधिकार नहीं है, भले ही वे मानते हों कि उनका कारण न्यायसंगत और धार्मिक है।

कनान में प्रवेश करने के समय इस्राएली खानाबदोशों की तरह रहते थे। उनके पास रथ और उन्हें खींचने वाले घोड़े नहीं थे। इस युग (13वीं या 14वीं शताब्दी ईसा पूर्व) के लिए रथ भयावह तकनीकी प्रगति थे क्योंकि उनका उपयोग पैदल सैनिकों के खिलाफ किया जाता था। रथ, उस युग के टैंक थे; वे मूल रूप से तेज़ गति से चलने वाले प्लेटफॉर्म थे जहाँ से काफी मानक हथियार लॉन्च किए जा सकते थे (उस समय यह भाले और तीर थे)। रथों के उपयोग से युद्ध के मैदान में जबरदस्त लाभ हुआ लेकिन युद्ध के इस उपकरण

को बनाने के लिए सुविधाओं और ज्ञान की आवश्यकता थी और इस्राएल ऐसा करने की स्थिति में नहीं था (लेकिन कई कनानियों के पास रथ थे)।

इसलिए प्रभु पहले युद्ध के मानसिक (मनोवैज्ञानिक) पक्ष से निपटते हैं। भय। एक ओर प्रभु स्वीकार करते हैं कि इस्राएल उन सशस्त्र सेनाओं के विरुद्ध जाएगा जो इस्राएल की सेनाओं से बड़ी हैं और जिनके पास तकनीकी श्रेष्ठता है। हालाँकि पद 1 इस्राएल को मिश्र में जो हुआ उसे याद करने के लिए कहता है। इस्राएल के पास न केवल कोई हथियार था, बल्कि उसके पास कोई सेना भी नहीं थी। इस्राएल के पास मिश्र से खुद को मुक्त करने या बचाने की कोई क्षमता नहीं थी, परमेश्वर ने केवल अलौकिक तरीकों से एक श्रेष्ठ शक्ति को उसके घुटनों पर ला दिया। इसलिए चूँकि परमेश्वर इस्राएल के साथ है, और यह सबसे पहले परमेश्वर का पवित्र युद्ध है, इसलिए इस्राएल को उन विशाल सेनाओं से डरने की कोई जरूरत नहीं है जिनका वे सामना करेंगे।

युद्ध शुरू होने से पहले परमेश्वर के प्रतिनिधि (उनके सेवक) याजक आगे आकर सैनिकों को संबोधित करेंगे। स्वाभाविक रूप से क्योंकि यह पवित्र युद्ध है, पवित्र याजक जो कुछ भी होगा उसके केंद्र में होंगे। जैसा कि मैंने पहले भी उल्लेख किया है, याजक, युद्ध में मौजूद होते हैं; उनके काम का एक हिस्सा तुरही बजाना है ताकि परमेश्वर को इस्राएल की मदद करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके और सैनिकों को संकेत दिए जा सकें। और दुर्भाग्य से अंग्रेजी अनुवाद आमतौर पर कुछ ऐसा छिपा देते हैं जिस पर हमें ध्यान देने की आवश्यकता है। क्या आपको व्यवस्थाविवरण अध्याय 6 में हमारे पिछले अध्ययन को याद है जिसका शीर्षक "शेमा" है? कभी-कभी इसे "हे इस्राएल, सुनो" कहा जाता है। शेमा एक शक्तिशाली इब्रानी शब्द है जिसका अर्थ केवल सुनना नहीं है। यह भाषण की औपचारिक शुरुआत से कहीं अधिक है, इसमें आज्ञा मानने का आदेश शामिल है। और यहाँ पद 3 में प्रभु कहते हैं कि पवित्र युद्ध की विभिन्न लड़ाइयाँ शुरू होने से पहले, याजक (अर्थात् महायाजक) को आगे बढ़कर घोषणा करनी है: "शेमा इस्राएल!" हे इस्राएल सुनो ! जो कहा जाने वाला है उसे सुनो और मानो। और क्योंकि पहला मुद्दा डर के बारे में है, इसलिए प्रभु ने महायाजक के माध्यम से इस्राएली सैनिकों को चार अलग-अलग तरीकों से डरने से मना किया: 1) अपने दिल को कायर न होने दें, 2) (युद्ध से) डरें नहीं, 3) घबराएँ नहीं (यानी, घबराएँ नहीं), 3) दुश्मन सैनिकों से डरें नहीं (कनानी लोगों से डरें नहीं)। और जिस चीज पर वे भरोसा कर सकते हैं वह यह है कि प्रभु उन्हें जीत की ओर ले जाएगा।

पुजारियों द्वारा सैनिकों को ईश्वर का संदेश देने के बाद अधिकारी अब सैनिकों से बात करते हैं और संदेश, आने वाली लड़ाई से 3 संभावित स्थानों से संबंधित है जो इस्राएली सेना के युवा सदस्यों के लिए उपलब्ध हैं। ये "अधिकारी" सेना के कमांडर नहीं हैं, वे नागरिक सरकारी अधिकारी हैं या, कुछ लोगों का मानना है कि ये लेवी हो सकते हैं जो सरकारी और धार्मिक प्राधिकरण में शामिल हैं। किसी भी मामले में वे सेना के अधिकारी नहीं हैं और वे पुजारी नहीं हैं जिन्होंने "डरो मत" का उपदेश दिया।

और युद्ध से छूट पाने का पहला संभावित कारण यह है कि एक युवा व्यक्ति के पास एक घर हो सकता है जिसे अभी तक आधिकारिक रूप से समर्पित नहीं किया गया है और इसलिए यदि वह युद्ध में मर जाता है तो कोई और उस पर कब्जा कर सकता है। मैं आपको शुरू में ही बता दूँ कि बाइबल के अकादमिक समुदाय में इस बात को लेकर बहुत असहमति है कि इसका क्या मतलब है। इब्रानी बाइबल में किसी घर को समर्पित करने या उससे जुड़ी किसी रस्म का कोई उल्लेख नहीं है, इसलिए यह शायद वह संकेत नहीं दे रहा है जो आम तौर पर माना जाता है। इसका मतलब यह हो सकता है कि उसने हाल ही में अपना नया घर बसाया है (उसने हाल ही में शादी की है) और इसलिए अभी तक परिवार शुरू नहीं किया है। अगर उसकी पत्नी, बच्चे पैदा करने से पहले विधवा हो गई थी तो घर किसी दूसरे व्यक्ति के कब्जे में आ सकता है और मध्य पूर्वी परंपरा में यह एक गंभीर मामला है। लेकिन ये सिर्फ शिक्षित अटकलें हैं।

सैन्य स्थगन का दूसरा संभावित कारण यह है कि उसने एक नया अंगूर का बाग लगाया है, लेकिन अभी तक उसका हिस्सा नहीं लिया है। विभिन्न अनुवादों में कहा जाएगा, "लेकिन उसने इसे काटा नहीं है" या हमारे सीजेबी के अनुसार "उसने इसे खाया नहीं है"। इस कथन के बारे में दो बातें: नंबर 1, जाहिर है कि यह पवित्र युद्ध लंबे समय तक चलने वाला है। यह इन इस्राएलियों के लिए एक ऐसे समय की बात कर रहा है, जो कनान में बसने के बाद आने वाला है, क्योंकि खानाबदोश इब्रानियों ने निश्चित रूप से रास्ते में अंगूर के बाग लगाने से नहीं रोका है। हालाँकि एक बार जब वे कनान में प्रवेश करते हैं, तो वे पहले से स्थापित अंगूर के बागों पर कब्जा कर लेंगे और वे उनमें वृद्धि करेंगे। लेकिन बात यह है: अगर हम यह समझना चाहते हैं कि इस विशेष स्थगन का कारण क्या है, तो हमें मूसा के व्यवस्था को समझने की आवश्यकता है। इस पद में आमतौर पर "कटाई" या "खाया" के रूप में अनुवादित इब्रानी शब्द **हिलेलो** है और इसका अर्थ है, "इसे अपवित्र करना"। इस बड़े शब्द से भ्रमित न हों। किसी चीज़ को पवित्र बनाना किसी चीज़ को पवित्र बनाना है। अपवित्र बनाना किसी ऐसी चीज़ को लेना है जो पवित्र है और उसे आम बनाना है (अशुद्ध या बुरा नहीं, बस "पवित्र नहीं", अब परमेश्वर के लिए अलग नहीं)। तो इसका क्या मतलब है कि जिस युवक ने नया अंगूर का बाग लगाया है, उसने अभी तक अपने अंगूर के बाग को "पवित्र नहीं" बनाया है?

चाहे वह अंगूर की बेल हो या बगीचे का फल, व्यवस्था यह है कि बेल या पेड़ के लगाए जाने के बाद पहले तीन साल तक फल को न तोड़ा जाए और न ही खाया जाए। रोपण के बाद केवल 5वें वर्ष में ही फल का मालिक इसे खा सकता है। यह विचार कहाँ से आया? **लैव्यव्यवस्था 19 को सुनिए : लैव्यव्यवस्था 19:23** "जब तुम किसी देश में प्रवेश करो और वहाँ खाने के लिए सभी प्रकार के पेड़ लगाओ, तो उनके फल को वर्जित समझो; तीन वर्ष तक वे तुम्हारे लिए वर्जित रहेंगे, उन्हें खाना नहीं चाहिए। 24 और चौथे वर्ष में उनके सभी फल पवित्र होंगे, यहोवा की स्तुति की भेंट। 25 लेकिन पाँचवें वर्ष में तुम उनके फल खा सकते हो, ताकि वे तुम्हारे लिए अधिक उपज दे; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।"

इसलिए पहले तीन वर्षों के लिए फल वर्जित है, जिसका अर्थ है कि इसका किसी भी उद्देश्य के लिए उपयोग नहीं किया जा सकता है और न ही इसे परमेश्वर को अर्पित किया जा सकता है। अगले वर्ष, चौथे वर्ष, फल को पवित्र घोषित किया जाता है (इसे पवित्र माना जाता है, परमेश्वर के लिए अलग रखा जाता है) और इस प्रकार सारी फसल परमेश्वर की होती है। 5वें वर्ष में फल अब पवित्र नहीं रह जाता है (इसे अपवित्र माना जाता है, अब इसे परमेश्वर के लिए अलग नहीं रखा जाता है) और इसलिए इसे खाया जा सकता है। सैन्य स्थगन के लिए इस विशेष कारण का विचार यह है कि नया दाख की बारी 5 वर्ष पुरानी होनी चाहिए, जिससे युवा व्यक्ति अंततः अपनी उपज का उपयोग करने में सक्षम हो। अन्यथा यह युवा सैनिक लड़ने का विकल्प नहीं चुन सकता है, बल्कि घर वापस जाकर 5वें वर्ष आने तक प्रतीक्षा कर सकता है। इसलिए यह व्यवस्था वास्तव में हमें यह दिखाने के लिए एक समय सीमा भी देता है कि परमेश्वर इस्राएल को बता रहे हैं कि कनान के लिए पवित्र युद्ध वर्षों तक चलने वाला है, ताकि कनान पर पवित्र युद्ध के समय नए खेत, दाख की बारियाँ और बाग लगाए जाएँ और परिपक्व हों।

एक युवा सैनिक के लिए तीसरा संभावित स्थगन, पद 7 में बताया गया है। यह है कि एक आदमी जिसकी शादी होने वाली है, लेकिन अभी तक शादी पूरी नहीं हुई है, उसे लड़ने की जरूरत नहीं है क्योंकि अगर वह मर जाता है तो उसने अपनी दुल्हन के लिए जो कीमत चुकाई है वह बर्बाद हो जाएगी और शायद किसी दूसरे आदमी को इसका फायदा मिल जाएगा। अब, यह इतना महत्वपूर्ण क्यों है, यह बहस का विषय है। हमारे पास उसी युग के मेसोपोटामिया समाजों के रिकॉर्ड हैं जो मूल रूप से अपने युवा पुरुषों को यही चीज़ देते हैं और इसका कारण अंधविश्वास और इस विश्वास से जुड़ा है कि सगाई कर चुके (लेकिन अभी तक विवाहित नहीं) पुरुष विशेष रूप से शैतानी प्रभावों के अधीन थे, इसलिए यह सभी के लिए सबसे अच्छा था कि वे सेना का हिस्सा न बनें। एक और संभावना यह है कि इब्रानियों के बीच यह माना जाता था कि मृत्यु के बाद भी जो अस्तित्व में रहता है वह यह है कि एक आदमी का जीवन सार उसकी संतानों में रहता है। इसलिए चूँकि विवाहित जोड़े तुरंत बच्चे पैदा करने लगे, इसलिए बच्चे पैदा करने का एक लक्ष्य यह था कि अगर आदमी मर जाता है तो उसका जीवन सार खत्म नहीं होगा बल्कि उसके बच्चों में जारी रहेगा। इसलिए, यदि किसी इब्रानी सैनिक को अभी तक संतान उत्पन्न करने का अवसर नहीं मिला है, तो उसकी सगाई हो चुकी है, लेकिन अभी तक उसकी शादी नहीं हुई है, तथा उसके जीवन का सार स्थायी रूप से समाप्त हो जाने का खतरा है।

यह "अधिकारियों" का काम है कि वे सैनिकों से पूछें कि क्या कोई इन स्थगनों का लाभ उठाना चाहता है और यदि हाँ, तो उनकी पात्रता निर्धारित करें। एक युवा व्यक्ति जो लड़ने से बहुत डरता था, वह भी स्थगन के लिए योग्य था क्योंकि ऐसा व्यक्ति अन्य सैनिकों के लिए हतोत्साहित करने वाला होगा।

अगली बार हम व्यवस्थाविवरण 20 में आगे बढ़ेंगे और पवित्र युद्ध में भाग लेने के लिए प्रभु के मापदंडों के बारे में अधिक बात करेंगे।